JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समतामूलक समाज के पक्षधर संत कबीर और संत गाडगे महाराज

प्रो. डॉ. बाळासाहेब सोनवणे
डॉ.अरविंद ब. तेलंग कला, विज्ञान व वाणिज्य
वरिष्ठ महाविद्यालय, निगड़ी,पुणे-44

सार - समतामूलक समाज के पक्षधर एवं संत शब्द के अर्थ को गरिमा प्रदान कर अपनी वाणी द्वारा समाज प्रबोधन करने वाले संत गाडगे महाराज और संत कबीर के विचारों की आज नितांत आवश्यकता है। आज भी अंध परंपरा एवं अज्ञानता में फंसे समाज को तर्क और वैज्ञानिकता के आधार पर विचार करने की आवश्यकता है। एक नव समाज निर्माण हेतु संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर आजीवन मानव हित हेतु कार्यरत रहे थे। वर्तमान में धर्मगत, जातिगत, भेदभाव, छुआछूत, उच्च-नीच की भावना तथा अंधविश्वास, आज्ञान, सांप्रदायिक कर्मकांड और अनिष्ट रूढ़ीवादी परंपराओं का प्रकोप समाज को पूरी तरह अपने शिकंजे में जकड़ा हुआ है। ऐसे समय में संत, महापुरुषों के विचारों का उजागर कर उसे आचरण में आत्मसात करना आवश्यक है। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य, इन्हीं महापुरुषों के संदेशों को लोगों तक पहुचाना है।

प्रस्तावना - संत, महापुरुषों एवं समाज सुधारकों का जन्म तथा उनका कार्य तत्कालीन सामाजिक आवश्यकता थी। कहा जाता है कि संत,महापुरुष या समाज सुधारक तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति की उपज होते हैं। अत: सामाजिक परिस्थिति के उपज सिद्धार्थ गौतम, बुद्ध, महात्मा बसवेश्वर, संत तुकाराम, संत कबीर, छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा फुले, छत्रपति शाहू महाराज, संत गाडगे महाराज और डॉ बाबासाहेब आंबेडकर हैं। इन्हीं संत, महापुरुषों ने सामाजिक सुधारणा के बीज बोये और समाज सुधार की एक परंपरागत विकसित हुई। सभी संत, महापुरुषों एवं समाज सुधारकों का कार्यकाल भिन्न-भिन्न रहा हो परंतु समाज सुधारकों का लक्ष्य एक ही रहा है। जिन संत, महापुरुषों और समाज सुधारकों के कार्य को एक साथ देखा जाएगा मान लीजिए उतने कालखंडों को एक साथ गले मिलते देखा जायेगा। इन्हीं संत, महापुरुषों तथा समाज सुधारकों ने समाज रचना का एक नया सूत्रपात किया हुआ दिखाई देता है। मनुष्य और मानव धर्म को केंद्र में रखकर सबसे पहले मानवता का बीज बोने का कार्य सिद्धार्थ गौतम बुद्ध ने किया है। समस्त मानव जाति एक ही है, ऐसी घोषणा करते हुए सभी को एक ही मंडप में लाने का अथक प्रयास महात्मा बसवेश्वर ने किया है। उन्होंने आजीवन पर हित कार्य करते हुए समाज सुधार की दूसरी कड़ी के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संत तुकाराम महाराज ने 'संत' शब्द की सार्थकता को गरिमा प्रदान करते हुए, अनिष्ठ व्यवस्था के प्रति आवाज उठाते रहे। वे वैज्ञानिकता के आधार पर समाज में स्थित अंध परंपरा पर प्रहार करते रहे। और समाज सुधार की परंपरा को गतिमान करते हुए, भक्ति के मार्ग से समाज सुधार का बीजारोपण करते हुए अमूल्य योगदान दिया है।

संत कबीर तर्क और वैज्ञानिकता के पक्षधर थे। समाज में स्थित आडंबरों पर प्रहार करते हुए उनकी कविता महोत्सव नहीं बल्कि अपने समय का विद्रोह बनकर समाज सुधार की धारा को निरंतर प्रवाहित करती रही है। संत कबीर की कविता अपने आप में ही समाज सुधार है। उन्होंने समाज में अपना योगदान कविता के माध्यम से दिया है। सत्रहवीं शताब्दी के एक महान संत कवि थे जो भारत में दीर्घ काल तक चले 'भक्ति आंदोलन' एक प्रमुख स्तंभ भी थे।

दो पंक्तियों में विश्व कल्याण की बात करते हुए अपनी दोहा रचनावली के द्वारा समाज सुधार की परंपरा को निर्वाह किया। अपनी माता बहनों को अगर सम्मान दिलाना हो तो दूसरों की माता बहनों को भी सम्मान देने की बात करते हुए स्वराज्य स्थापना, 'सहित स्वराज भोग ना होकर योग है' का आचरण करते हुए आदर्श राजा एवं आदर्श समाज की स्थापना करते हुए छत्रपति शिवाजी महाराज ने इसी परंपरा को आगे बढ़ायाहै। महात्मा फुले समाज सुधार की आद्वितीय कड़ी रहे हैं। शिक्षा के बिना समाज गूंगा है, यह जानकर महात्मा फुले लिखते हैं-

"विद्या बिना मति गयी,
मति बिना नीति गयी।
नीति बिना गति गयी,
गति बिना वित्त गया।
वित्त बिना शुद्र गये,
इतने अनर्थ,
एक अविद्या ने किये।"

इस प्रकार की काव्य के माध्यम से शिक्षा के महत्व को विशेष अर्थ प्रदान किया है। भारत कृषि प्रधान देश है। महात्मा फुले ने कृषकों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए, समाज सुधार के एक अन्य काल खंड का प्रतिनिधित्व करते हुए; समाज सुधार की परंपरा को गति प्रदान की है। बुद्ध, कबीर तथा महात्मा फुले को अपना गुरु मानकर समाज सुधार की परंपरा को डाॅ. बाबासाहेब आंबेडकर ने संविधान के माध्यम से आगे बढाया है।

डॉ.आंबेडकर ने प्रस्थापित गुरु शिष्य परंपरा को खारिज करते हुए समाज सुधार की दृष्टि से गुरु शिष्य परंपरा का बीजारोपण किया। इसी विचार के वाहक संत गाडगे महाराज ने अपनी कीर्तन शैली तथा तर्क और वैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा समाज प्रबोधन करते रहे। संत कबीर एवं संत गाडगे महाराज ने अपने-अपने समय में सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते हुए समाज सुधार में योगदान दिया है।

संत गाडगे महाराज का कार्यकाल 19वीं सदी (23 फरवरी 1876) है तो संत कबीर का कार्यकाल 15वीं सदी है। परंतु दोनों का लक्ष्य समाज सुधार ही है । संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर ने अपने-अपने कार्यकाल में समाज को बह्यआडंबरों, अंधविश्वास तथा निरक्षरता से बाहर निकालने हेतु तर्क की कसौटी लगाकर तथा वैज्ञानिक विश्लेषण पद्धिती का प्रयोग कर नव समाज की रचना की है। असल में देखा जाए तो समाज सुधार की परंपरा काफी पुरानी है अनेक संतो, महापुरुषों ने अपने-अपने कालखंड में समाज सुधारक के रूप में योगदान दिया है। सभी महापुरुषों का विचार एक ही है। परंतु प्रस्तुत आलेख में सभी संत, महापुरुषों का एकत्रित विचार करना संभव नहीं है। इसलिए उक्त आलेख में संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर के कार्य को केंद्र में रखकर लिखा जा रहा है। दो संतों के कार्यकाल का मतलब दो कालखंडों का विचारहै। यही विचार भविष्य में समाज सुधार परंपरा के पथदर्शक सिद्ध होंगे।

संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर के विचार आज भी प्रासंगिक है। आधुनिकता के नाम पर आजकल आनाचार फैलता जा रहा है। तत्कालीन धर्मानधता नया रूप लेकर समाज के बीच आज भी पनपती नजर आ रही है। संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर ने जिस जातीयता का जिंदगी भर विरोध किया वही जातीयता आज

पुनः उग्र रूप धारण कर रही है। संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर के विचारों को उजागर करते हुए समाज प्रबोधन करने की आवश्यकता आज महसूस हो रही है। संत गाडगे महाराज समाज तथा गांव को निर्मल गांव का महत्व स्वयं के आचरण तथा कीर्तन द्वारा समझाते रहे, तो संत कबीर आजीवन थभ्रष्ट समाज का मार्गदर्शन करते हुए तर्क और वैज्ञानिकता की कसौटी पर हर घटना प्रसंग प्रस्तुत करते हैं। निर्मल ग्राम एवं निर्मल समाज मन की आज नितांत आवश्यकता है। उसी को ध्यान में रखकर इस आलेख में दोनों महापुरुषों के विचारों को एक साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की जा रही है। लगभग 34 वर्षों बाद लागू हो रही यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को देखा जाए तो संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर और अधिक प्रासंगिक बनकर सम्मुख आ रहे हैं। संत गाडगे महाराज ने कहा है कि "शिक्षा यानी सभी सुधारणाओं का महाद्वार। सभी प्रकार की उन्नति का द्वारा ही शिक्षा है। शिक्षा ही बहुमूल्य संपत्ति है। शिक्षा के बिना मनुष्य पशु समान है। शिक्षा का अभाव ही लोगों के गरीबी का कारण है।"

संत गाडगे महाराज ने कीर्तन को समाज प्रबोधन का हथियार बनाकर गरीब बच्चों को कपड़े, पाटी-पेंसिल और कापी देने का संदेशा दिया है। "लोग अपने बच्चों को प्रदेश भेजने के लिए छटपटाते हैं। अपनी पत्नी और बच्चों को ही सब कुछ मानते हैं परंतु अन्य गरीब बच्चों के बारें में विचार तक उनके मन को आता नहीं है।" ऐसे लोगों को संत गाडगे महाराज मनुष्य नहीं बल्कि बैल समझा है।

संत कबीर ने तो पारंपरिक शिक्षा को पूर्णतः नकारते हुए प्रेम की शिक्षा को ही महत्व दिया है। प्रेम शब्द का अर्थ समझने से ही मनुष्य पंडित होने की बात कबीर ने की है। वर्तमान में लोग पोथियां पढ़- पढ़ कर अधिक धर्मांध या जातीय वादी बनते जा रहे हैं इसीलिए कबीर की दृष्टि से पोथियां किसी काम की नहीं है, जो मनुष्य को मनुष्य बनाती नहीं, संत कबीर कहते हैं कि - "पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय।

ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।"

संत कबीर के अनुसार व्यवहारिक ज्ञान किताबिक ज्ञान से बढ़कर होता है। किताबीज्ञान का रट्टा मार कर कोई किताबी विद्वान आवश्य हो गए लेकिन उन्होंने व्यवहारिक ज्ञान को प्राप्त ही नहीं किया है। मानवता का मूल स्तंभ है एक दूसरे के प्रति आदर भाव और प्रेम भाव। इनके अभाव में मात्र किताबी ज्ञान का कोई महत्व नहीं है। किताबी ज्ञान जनहितकारी या लोक कल्याणकारी होगा ही यह कहना कठिन है। अतः वेद या शास्त्र के ज्ञान की तुलना में प्रेम सबसे महत्वपूर्ण माना है। वर्तमान में हमारे पास सभी सुख सुविधाएं हैं लेकिन प्रेम की कमी है इसलिए आज संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर के शिक्षा विषयक विचारों की नितांत आवश्यकता है। गरीबों मे शिक्षा और प्रेम भाव का अभाव शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर रहा है, जिसके साथ ही मनुष्य समाज नष्ट होने की कगार पर है। उसे बचाना हो तो दोनों संत, महापुरुषों के विचारों का आचरण करते हुए उसे पर अमल करना अनिवार्य है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पूर्णतः बिना अनुदानित तत्व पर आधारित है। बताया जा रहा है कि शिक्षा नीति 2020 कौशल्य पर आधारित होगी परंतु उसका आर्थिक आधार विद्यार्थियों की फीस रहेगी।फीस पर आधारित नई शिक्षा नीति में स्कूल या कॉलेजेस चलाने हो तो विद्यार्थियों से अधिक से अधिक फीस वसूलना आवश्यक है। दूसरी एक बात महत्वपूर्ण है कि पहले शिक्षा क्षेत्र सेवा क्षेत्र था परंतु आजकल वह व्यवसाय बन गया है। संस्थाएँ अधिकाधिक मुनाफा कमाने हेतु विद्यार्थियों से अधिक से अधिक फीस वसूल करेंगे जिससे गरीब विद्यार्थी शिक्षा से दूर रहने की संभावना है। समाज में लगभग 40% लोग अशिक्षित है । उस पर यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति नीजीकुरण पर आधारित होने के कारण शिक्षा से वंचित रहने की संभावना है। अनेक संत, महापुरुषों ने आजीवन कष्ट उठाकर शिक्षा के दरवाजे बहुजन वर्ग को खुले कर दिये थे, जो पुनः एक बार बंद होने जा रहे हैं। इसलिए संत, महापुरुषों द्वारा शिक्षा के संदर्भ में किया गया उद्बोधन वर्तमान परिस्थिति का इलाज दिखाई दे रहा

है। संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर के शिक्षाविषयक विचार तत्कालीन परिस्थिति, वर्तमान स्थिति में तथा भविष्य के लिए भी पथदर्शक सिद्ध होंगे।उन्हीं के विचारों को उद्धृत करते हुए समाज प्रबोधन का उद्देश्य प्रस्तुत आलेख है। संत गाडगे महाराज तथा कर्मवीर भाऊराव पाटील गरीब, अनपढ़ लोगों को शिक्षा दिलाने हेतु रात दिन काम कर रहे थे। 'रयत शिक्षण संस्था' का सरकार की ओर से जब आर्थिक अनुदान बंद हुआ तो संत गाडगे महाराज कर्मवीर भाऊराव पाटील को लेकर तत्कालीन मुख्यमंत्री के पास पहुँचे। उन्हें बताया कि कर्मवीर गरीब बच्चों के लिए कितनी मेहनत से स्कूल चला रहे हैं। लोगों की शिक्षा के लिए उन्हें मदद करना आवश्यक है।

गाडगे महाराज की इस पहल से मुख्यमंत्री ने 'रयत शिक्षण संस्था' के लिए पुन: अनुदान देना आरंभ किया। इतना ही नहीं तो संत गाडगे महाराज पंढरपुर में एक चोखामेळा नामक धर्मशाला चलाते थे। जिसे डॉ. आंबेडकर को सौपने की बात करते हैं तब डॉ. आंबेडकर कहते हैं कि "इतनी भी क्या जल्दी है? जबाव में उन्होंने कहा कि संत कबीर कहते थे, "देह घड़की पावनी, देखले परिचना।" मतलब शरीर का क्या भरोसा आज है कल नहीं। इसलिए आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।

संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर ने जातीयता, छुआछूत पर जमकर हल्ला बोल दिया था। उनका मानना था कि जातियां सिर्फ दो ही है - एक स्त्री और पुरुष। ऊँच-नीच कोई नहीं है। जाति प्रथा, छुआछूत इस देश पर लगा हुआ कलंक है। इस विषय पर उद्बोधन करते हुए अपने कीर्तनों में संत गाडगे महाराज कहते हैं - "तुम्हें कितने दांत हैं? उत्तर-बत्तीस। हरिजन को कितने हैं? उत्तर -बत्तीस। तुम मां के पेट में कितने दिन थे? 9 महीने 9 दिन। हरिजन कितने दिन होते हैं? 4 महीने या 6 महीने? उत्तर में नहीं! 9 महीने 9 दिन ही होते हैं तो फिर बताओ हरिजन की अलग जाती कैसे हुई? वह भी स्त्री या पुरुष ही है। भारत में यह छुआछूत है, विलायत में नहीं है। संत गाडगे महाराज ऐसे कई उदाहरण देकर जातीयता का डटकर विरोध करते थे। प्रश्न और उत्तर के रूप में हिंदू मुसलमान भेदा-भेद पर भी उन्होंने कठोर प्रहार किया है। संत कबीर ने अपने कालखंड में जातीयता का विरोध करते हुए दो टुक बातें की है। संत गाडगे महाराज तर्क के आधार पर जातीयता के विरोध में प्रश्न उपस्थित करके कहते हैं कि "हिंदू माँ की कोख में 9 महीने 9 दिन रहते हैं। और हरिजन या मुसलमान भी 9 महीने 9 दिन ही माँ की कोख में रहते हैं, तो फिर यह अलग जाति कैसे हुई।" संत कबीर अपने दोहों के माध्यम से समाज को तर्क के आधार पर पूछते हैं कि -

"जो तू ब्राह्मण-ब्राह्मणी का जाया!
आन बाट काहे नहीं आया !!"

मतलब यह कि आप अपने आप को ब्राह्मण बताते हो, ब्राह्मण होने का गर्व करते हो तो फिर आप अन्य रास्ते से या तरीके से पैदा क्यों नहीं हुए। एक अन्य दोहों के माध्यम से कबीर जातीयता का विरोध करते हुए लिखते हैं कि -

'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान,
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।'

संत कबीर जाति के बदले ज्ञान पूछने की बात करते हैं। जैसे की तलवार के बिना म्यान किसी काम की नहीं रहती। कीमत तो तलवार की होती है, वैसे ही मनुष्य की जाति पूछने की बजाय उसका ज्ञान पूछने की आवश्यकता है।

संत गाडगे महाराज एवं संत कबीर की विचारधारा बुद्ध की विचारधारा है। वही विचारधारा महात्मा बसवेश्वर की है, वही महात्मा फुले की है, वही विचार धारा डॉ अंबेडकर की है। सभी संत, महापुरुष समतावादी और मानवतावादी विचारधारा के पक्षधर थे। जो बातें बुद्ध, कबीर, फुले, गाडगे महाराज ने की हैं, वही बातें डॉ. अंबेडकर ने संविधान में उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

'विद्या बिना मती गई' इस अखंड (मराठी काव्य प्रकार) में महात्मा फुले ने लिखा है कि एक अविद्या ने कई अनर्थ कियें हैं। केवल अशिक्षा के कारण ही समाज अज्ञान, अंधविश्वास, बाह्याडंबर, अनिष्ट रूढ़ीवादी परंपराओं का शिकार हुआ है। संत कबीर का समय और संत गाडगे महाराज का समय अलग-अलग होने के बावजूद अंधविश्वास, अंध परंपराओं का वर्चस्व समाज में दोनों काल खंड में मौजूद था। दोनों संतों ने इस अंधविश्वास भरी लोगों की मानसिकता पर अपनी वाणी द्वारा प्रहार किया है। संत कवि स्पष्ट रूप से लिखते हैं कि -

"माको कहां ढूंढें रे बंदे,
मैं तो तेरे पास में।
ना मैं तीरथ में, ना मैं मूरत में,
ना मैं मंदिर में, न मस्जिद में,
ना काबे, ना कैलाश में
मैं तो तेरे पास में।"

संत गाडगे महाराज अपने कीर्तन में लोगों से पूछते हैं - "सत्यनारायण की पूजा ईश्वर भक्ति नहीं है। सत्यनारायण लालची लोग करते हैं। बच्चा नहीं होता करो सत्यनारायण, गाड़ी चाहिए करो सत्यनारायण।" सत्यनारायण पूजा से ना बच्चा होता है, ना गाड़ी मिलती है। यह सब अंधविश्वास है। गाडगे महाराज बताते हैं कि सतनारायण की पोथी में लिखा है- 'साधु, बनिया ने प्रसाद नहीं किया, सतनारायण की पूजा नहीं की, इसलिए उसका करोड़ों रुपयों का जहाज पानी में डूब गया।' सत्यनारायण का पाठ करने वाले ढोंगी साधु महाराजों से संत गाडगे महाराज कहते हैं कि करोड़ों रुपयों का जो जहाज पानी में डूबा है उस समंदर के किनारे जाकर सत्यनारायण की पूजा करो, अगर जहाज ऊपर आता है तो दक्षिणा के रूप में ढाई रूपयों की बजाय ढाई लाख दक्षिणा मिलेगी।' इतना ही नहीं, समाज को वैज्ञानिकता की राह बताते हुए कहते हैं कि मिन्नतें मांगने से अगर बच्चा होता है तो देवियों विचार करो, पति की जरूरत ही क्या है?' इस प्रकार स्पष्ट और तार्किक विचारों के माध्यम से इन दोनों संतों ने जीवन भर समाज का प्रबोधन हेतु अथक प्रयास करते रहें। संत गाडगे महाराज और संत कबीर का लक्ष्य एक ही था। साथ ही गाडगे महाराज कबीर के संदर्भ भी दिया दिया करते थे। संत गाडगे महाराज उदाहरण के तौर पर कहते हैं-

"जत्रा में फतरा बिठाया तीरथ बनाया पानी।
दुनिया भई दिवानी पैसे की धुलधानी।"

सारांश यह है कि जत्रा पत्थरों की होती है क्योंकि मंदिरों में मूर्तियाँ पत्थरों की ही होती है। वह आलू, प्याज जैसे खरीद कर लायी जाती है और उन्हें मंदिरों में स्थापित कर पैसों की धुलधानी की जाती है।

समाज में अनेक अंध परंपराएँ विद्यमान है। इन परंपराओं का शिकार मनुष्य तो है ही साथ ही प्राणी भी इससे अछूते नहीं हैं। संत गाडगे महाराज कहते हैं कि इन बेजुबान प्राणियों पर अपने बच्चों की तरह प्यार करना चाहिए। हम जीव्हा स्वाद के लिए उनका बलि देने देते हैं। उन प्राणियों में भी आत्मा होती है। संत गाडगे महाराज पूछते हैं - हम विवाहों में गड़बड़ करते हैं क्या नहीं? जवाब –हां । आंगन में बकरे को काटने से खून की होली होती है या नहीं? जवाब- हां, होती है।' यह बुरा कृत देखकर हमारी आंखों में आंशु आने के बजाय हम उसे तो मसाला लगाकर खाने के रूप में प्रयोग करते हैं। इस तरह गाडगे महाराज प्राणियों की बलि रोकने का संदेश देते हैं। इसी तरह संत कबीर भी अपने दोहों में यही संदेश देते हुए कहते हैं-

"दिन को रोजा रहत है, राति हनत है गाय।
यह खून वै बंदगी, क्यों कर खुशी खुदाय।"

जीव हिंसा न करने और मांसाहार से बचने का संदेश लगभग दोनों संतों ने दिया है। दोनों संतों ने समाज में स्थित अमनुष्यता के खिलाफ आवाज उठाते हुए समाज का प्रबोधन किया है। समाज को आचरण भ्रष्टता से मुक्त करने हेतु समाज में स्थित जातीयता, ऊँच-नीचता, धर्मांधता, स्त्री-पुरुष भेदा -भेद, अन्याय, अत्याचार से मुक्त

आदर्श समाज के निमार्ण हेतु अथक प्रयास करते रहें हैं। मनुष्य धन लालसा के कारण गलत रास्ता अपनाता है। असल में देखा जाए तो कबीर की वाणी सार्थक सिद्ध होती है। वे कहते हैं –

"साई इतना दीजिए जामे कुटुंब समाय
मैं भी भूखा न रहूं और साधु भी भूखा न जाए।"

यह दोहा आज की लालसी प्रवृति पर करारा चोट करता है। सशक्त समाज के लिए लालसा लिप्त, वासना लिप्त, भेदा-भेद से मुक्त समाज होना आवश्यक है। समाज को तन और मन से निर्मल करने का प्रयास दोनों संतों ने किया है। दोनों संतों के विचारों की प्रासंगिकता आज भी कायम है।

निष्कर्ष -

संत गाडगे महाराज(डेबुजी झिंगराजी जाणोरकर) और संत कबीर सही अर्थ में लोको धारक, प्रबोधनकार, मानवतावादी, विज्ञाननिष्ठ, तर्कनिष्ठ तथा आचरण से और विचारों से भी संत थे। दोनों अशिक्षित थे। परंतु शिक्षा के पक्षधर थे। समाज में स्थित उच्च-नीचता, जाति-पाति, धर्मांधता, बाह्याडंबर, अंधविश्वास, अनिष्ट रूढ़ी परंपरा, स्त्री-पुरुष विषमता, आचरण भ्रष्टता, धन लालसा जैसे कई समस्याओं को उद्घाटित करते हुए समाज प्रबोधन का प्रयास किया है। स्वयं अनुभव, तार्किकता और वैज्ञानिकता के आधार पर समाज में परिवर्तन किया जा सकता है। इस बात से वे भली-भाँति परिचित थे।

सभी अंध परंपराओं का मूल अशिक्षा है। यह जानकार समाज परिवर्तन हेतु दोनों संत आजीवन प्रबोधन कार्य करते रहे। दोनों का मानना था कि सभी का जन्म एक ही पद्धति से होता है। दोनों का खून लाल ही होता है। इसका आशय है कि मनुष्य जाति एक ही है। इनमें भेदा-भेद केवल काजी-पंडितों का छलावा है। मनुष्य की केवल स्त्री और पुरुष यह दो ही जाति है। सभी में ईश्वर का अंश है। ईश्वर घट-घट में स्थित है। इसलिए वह ना मंदिर में है, ना काबे कैलाश में। ना वह मंदिरों में है, ना मूर्तियों में है। संत कबीर कहते हैं - अगर ईश्वर मंदिरों, मस्जिदों में है तो अन्य जगहों पर कौन है? काशी में मरने से अगर मुक्ति मिलती है तो हमें ऐसी मुक्ति नहीं चाहिए। यह दोनों संत न केवल बोलने वाले थे बल्कि कृति करने वाले थे। मराठी में कहा जाता है - बोले तैसा चाले त्याची वंदावी पावले।

कहने का तात्पर्य है कि बोले तैसा चले उसका नमन करना चाहिए। वर्तमान में सामाजिक अस्वस्थता, अंधविश्वासों की बढ़ती परंपराओं के कारण हिंदू, मुसलमान के बीच भेद-भाव बढ़ रहा है। यह अखंड भारत के लिए बहुत बड़ा खतरा है। स्वार्थांध लोग धर्म- धर्म के बीच, जाति-जाति के बीच, मजहब-मजहब के बीच, संप्रदाय-संप्रदाय के बीच तथा प्रदेश-प्रदेश के बीच विवाद खड़े करके अपनी रोटी सेंकना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में संत कबीर और संत गाडगे महाराज के विचारों की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु उक्त आलेख लिखा गया है।

संदर्भ : -

1) सामाजिक क्रांति से अग्रदूत- गाडगे बाबा : डॉ. धनंजय लोखंडे
2) संत गाडगे बाबा - प्रबोधनकार ठाकरे
3) सामाजिक क्रांति के अग्रदूत गाडगे बाबा अनुवाद - प्रो. डॉ. बाळासाहेब सोनवणे